अध्याय–8

उपसंहार

अध्याय–8

उपसंहार

प्रेमचन्द का प्रवेश हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक युगान्तकारी घटना के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। हिन्दी साहित्य के वे ऐसे प्रथम उपन्यासकार हैं जिन्होंने एक आदर्श साहित्यकार के रूप में सम्पूर्ण भारतीय मध्यवर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य किसान, मज़दूर, ग़रीबी की समस्या, गाँव की आर्थिक विषमता से ग्रस्त लोग, मध्यवर्ग, ज़मींदार, निम्नवर्ग, उच्चवर्ग व सामन्तवादी नीति का मर्मस्पर्शी चित्रण है। किसी भी युग का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक जीवन एक दूसरे से परस्पर जुड़ा होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में इन सभी परिस्थितियों से सम्बन्धित समस्याओं तथा उनके समाधान का व्यापक और यथार्थ चित्र अंकित किया है।

प्रेमचन्द दूरद्रष्टा साहित्यकार थे। उनका उपन्यास साहित्य वर्ग–व्यवस्था ज़मींदारी–प्रथा, मज़दूर–किसान समस्या, ग़रीबी, स्वराज्य का प्रश्न आदि विषयों पर केन्द्रित था। प्रेमचन्द देश की हर जाति व धर्म के प्रति समान भाव रखते थे और यही भावना वह जनता तथा अपने पाठकों के बीच पहुँचाना चाहते थे।

प्रेमचन्द के उपन्यास उनके युग की परिस्थितियों की वाणी है। यदि प्रेमचन्द के उपन्यासों का पूरा अध्ययन करें तो मध्यवर्ग के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट होता दिखायी देता है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'उभरता हुआ' मध्यवर्ग नैतिक मूल्यों की स्थापना करने में सफ़ल हुआ है। नैतिक मूल्यों पर विश्वास रखने के कारण उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में असत्य पर सत्य की जीत दिखायी है।

प्रेमचन्द एक यथार्थवादी साहित्यकार थे। वह जीवन की सच्चाई को पहचानते थे। उनका साहित्य बीसवीं सदी के हिन्दुस्तान का सच्चा इतिहास है।

प्रेमचन्द से पहले जिन उपन्यासकारों ने मध्यवर्ग की समस्याओं को अपने साहित्य में अंकित किया वह मुख्य रूप से सुधारक थे। उन्होंने मध्यवर्ग की समस्याओं को युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में व्यापक रूप से उठाया है। प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग द्वारा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा पर ज़ोर दिया क्योंकि उनकी नैतिक मूल्यों में गहरी आस्था थी। उनके उपन्यास के मध्यवर्गीय पात्र नैतिक मूल्यों को लेकर चलते हैं। हमेशा सत्य की जीत दिखलाना उनका जीवनदर्शन था। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) में भारतीय समाज के उभरते मध्यवर्ग के नैतिक आदर्शों को स्थापित किया है किन्तु प्रेमचन्द की आदर्शवादी दृष्टि 'मंगलसूत्र' उपन्यास की रचना तक छूट चुकी थी जिसका साक्ष्य 'मंगलसूत्र' उपन्यास का नायक देवकुमार है। प्रेमचन्द ने अपनी प्रारम्भिक कृति से लेकर अन्तिम कृति तक मध्यवर्ग को अपनी दृष्टि में रखा। मध्यवर्गीय जीवन की हर छोटी–से–छोटी समस्या उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हुई। जहाँ कहीं भी उन्हें अवसर मिला वे मध्यवर्गीय समाज के खोखलेपन पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूके। प्रेमचन्द मध्यवर्गीय समाज की सीमाओं और शक्तियों को पूरी तरह जानते थे उनका मानना था कि समाज को नई आस्थाओं, विश्वासों और नवीन दृष्टियों में ढालने वाला मध्यवर्ग होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग की दुर्बलताओं व कमियों का जहाँ एक ओर व्यापक चित्रण किया है वहीं दूसरी ओर इस वर्ग की सुधारवादी व आदर्शवादी भावनाओं का चित्रण करना भी नहीं भूले हैं। प्रेमचन्द की कृतियों के अध्ययन के बाद यह बात पूर्णतः सत्य हो जाती है कि वे निम्नवर्ग और

मध्यवर्ग के लेखक थे यद्यपि प्रेमचन्द ने उच्चवर्ग का भी चित्रण अपने साहित्य में किया है।

'प्रतिज्ञा' उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग के सुधारवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करना अपना लक्ष्य बनाया है। 'प्रतिज्ञा' का युग मध्यवर्ग के संघर्ष का विकासशील काल था। 'प्रतिज्ञा' में प्रेमचन्द ने अपने युग के मध्यवर्गीय समाज के नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने विधवा–विवाह, स्त्री–स्वतंत्रता व जीविकोपार्जन की समस्या आदि को रेखांकित किया है। 'सेवासदन' प्रेमचन्द कृत ऐसा उपन्यास है जिसमें प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की सबसे ज्वलन्त समस्या नारी जीवन की समस्याओं को उठाया है। प्रेमचन्द ने जिस समय 'सेवासदन' की रचना की उस युग में समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। 'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की दहेज–समस्या, पाखण्ड, रूढ़िवादी सोच व झूठी प्रदर्शनप्रियता को रेखांकित किया है मुख्य रूप से प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में वेश्याओं के सुधार की बात की जिसका कारण कहीं–न–कहीं धन का अभाव और आर्थिक समस्या है जो कि मध्यवर्गीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है। क्योंकि धन के अभाव से ही अनेक सामाजिक बुराईयाँ उत्पन्न होती है शायद यही कारण है कि 'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने पहली बार मध्यवर्गीय समाज के नैतिक मूल्यों के खोखलेपन को प्रस्तुत किया है। समाज किस प्रकार पतन की ओर जा रहा है, इसका चित्रण हमें 'सेवासदन' में मिलता है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द के पात्र यथार्थ की सीमा से आगे निकलकर आदर्श की सीमा को छूते हुए दिखाई देते हैं। 'प्रेमाश्रम' जबकि प्रेमचन्द कृत कृषि सम्बन्धी उपन्यास है फिर भी 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में मध्यवर्ग का चित्रण गौण रूप में हुआ है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने

मध्यवर्ग पर अंग्रेज़ी रहन–सहन व सभ्यता का पूरा प्रभाव दिखाया है। 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचन्द ने औद्योगीकरण से पहले के गाँव की सामाजिक व आर्थिक दशा का चित्रण किया है। प्रेमचन्द कृत 'वरदान' उपन्यास का सम्बन्ध भी मध्यवर्गीय जीवन से है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग के आदर्शवाद को दिखाने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत उपन्यास में हम मध्यवर्गीय समाज की नारी जीवन की समस्याओं को जगह–जगह देख सकते हैं। प्रेमचन्द कृत 'निर्मला' उपन्यास का पूरा कथानक मध्यवर्ग पर आधारित है। इस उपन्यास के सभी पात्र मध्यवर्ग के हैं। 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द ने पूर्ण रूप से मध्यवर्गीय नारी के जीवन की विभिन्न समस्याओं को रेखांकित किया है। उपन्यास की कथा दहेज–समस्या पर आधारित है जोकि मध्यवर्गीय समाज की प्रमुख समस्या है। जिसके कारण मध्यवर्गीय समाज बुरी तरह से जकड़ा हुआ है और न ही वह उससे बाहर आने का प्रयास करता है जिसका उत्तरदायित्व इस समाज की आर्थिक परिस्थितियों पर है। प्रेमचन्द ने 'निर्मला' उपन्यास में अनेकों परिस्थितियों के बीच घुटते हुए मध्यवर्गीय समाज को रेखांकित किया है। 'रंगभूमि' उपन्यास में प्रेमचन्द ने औद्योगिक समस्या के साथ मध्यवर्ग की अनेक समस्याओं को रेखांकित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में मध्यवर्ग की राष्ट्रीय चेतना मुख्य रूप से हमारे सामने आती है। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में हम निम्न–मध्यवर्ग की संयुक्त परिवार से जुड़ी हुई अनेक समस्याओं को देख सकते हैं। प्रेमचन्द ने 'कायाकल्प' उपन्यास की कथा का निर्माण पूर्व जन्म के चमत्कारों व मध्यवर्गीय जीवन के आधार पर किया। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की सुधारवादी भावना को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि प्रस्तुत उपन्यास में हम मध्यवर्गीय समाज के

सामाजिक जीवन के साथ सांस्कृतिक जीवन को भी देख सकते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द ने सांस्कृतिक धरातल पर साम्प्रदायिकता की समस्या का निरूपण मूल उद्देश्य के रूप में रखा है। 'ग़बन' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की समस्याओं को बहुत ही सुन्दर ढंग से उद्घाटित किया है। 'ग़बन' में प्रेमचन्द की दृष्टि मुख्य रूप से मध्यवर्गीय समाज पर ही रही है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यवर्गीय समाज की प्रत्येक परिस्थितियों पर खुलकर विस्तार से चर्चा की है। संक्षेप में हम यह भी कह सकते हैं कि प्रेमचन्द कृत 'ग़बन' मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं का जीता–जागता आईना है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में हम प्रेमचन्द द्वारा मध्यवर्गीय समाज की राजनीतिक चेतना को सशक्त रूप में देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में तत्कालीन समाज में व्याप्त प्रत्येक परिस्थिति को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने 'कर्मभूमि' उपन्यास के कथा का प्रारम्भ मध्यवर्गीय परिवार से किया है। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने शोषक, शोषित और सुधारक आदि वर्ग–विभाजन को 'कर्मभूमि' उपन्यास के कथापटल पर उतारने का एक सफ़ल व सजीव प्रयास किया। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द की पूरी दृष्टि राजनीतिक परिवर्तन में होने वाले नवजागरण की तरफ़ रही है। साथ ही इस उपन्यास में राजनीतिक क्षेत्र में मध्यवर्गीय नारी की जागरुकता को हम यथास्थान देख सकते हैं। 'गोदान' उपन्यास का उद्देश्य मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन को उद्घाटित करना है। 'गोदान' प्रेमचन्द कृत किसान जीवन का महाकाव्य है। किन्तु प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में शहरी मध्यवर्गीय जीवन को अत्यन्त सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत उपन्यास में शहरी मध्यवर्ग की सामाजिक समस्याओं (जैसे प्रदर्शनप्रियता, आर्थिक दशा, धार्मिक दृष्टिकोण, खोखली नैतिकता आदि) का चित्रण हमें

जगह–जगह देखने को मिलता है। 'गोदान' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग के वैयक्तिक दृष्टिकोण को रेखांकित किया है जिस पर पाश्चात्य सभ्यता का पूरा प्रभाव देखा जा सकता है। प्रेमचन्द मध्यवर्ग के गौरव को नहीं भूलना चाहते थे शायद यही कारण है कि कृषक जीवन का महाकाव्य होते हुए भी 'गोदान' मध्यवर्ग की चेतना को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने में सफ़ल हुआ है क्योंकि समाज की चेतना व आगे बढ़ने की प्रवृत्ति प्रेमचन्द को मध्यवर्ग के व्यक्तियों में मिली। प्रेमचन्द कृत अधूरे उपन्यास 'मंगलसूत्र' के अध्ययन के बाद यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द की दृष्टि निम्न तथा उच्चवर्ग से हटकर पूरी तरह मध्यवर्ग पर केन्द्रित हो गयी थी। प्रेमचन्द 'मंगलसूत्र' के सिर्फ चार परिच्छेद ही लिख पाये थे कि समय और स्वास्थ्य ने उनका साथ सदैव के लिए छोड़ दिया। प्रेमचन्द ने 'मंगलसूत्र' में मध्यवर्ग की हर परिस्थिति की ओर संकेत दिये हैं। प्रेमचन्द ने 'मंगलसूत्र' में सामाजिक समस्या के अन्तर्गत नारी की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया तथा उसे महत्त्वपूर्ण माना है। 'मंगलसूत्र' के पात्र देवकुमार के माध्यम से प्रेमचन्द स्वयं की भाषा बोल रहे हैं चूँकि प्रेमचन्द का सम्बन्ध मध्यवर्ग से था इसीलिए 'मंगलसूत्र' के मुख्य पात्र देवकुमार के माध्यम से उन्होंने अपने विचार जनता के सामने लाने का प्रयास किया। वह इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन के हर पहलू व विचारधारा को प्रस्तुत करना चाहते थे। इन्हीं कारणवश हम कह सकते हैं कि यदि प्रेमचन्द 'मंगलसूत्र' पूरा कर पाते तो यह मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित एक संघर्ष प्रधान यथार्थवादी रचना होती।

प्रेमचन्द के सभी उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट है कि प्रेमचन्द अपने किसी भी उपन्यास में मध्यवर्ग को नहीं भूले बल्कि अधिकतर रचनाएँ मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के प्रत्येक दृष्टिकोण व

समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। 'प्रतिज्ञा' में अमृतराय, सुमित्रा, प्रेमा व कमलाप्रसाद; 'वरदान' में प्रताचन्द, विरजन; 'सेवासदन' में कृष्णचन्द, सुमन, गजाधर; 'प्रेमाश्रम' में ज्वालासिंह, ईमानअली; 'निर्मला' में निर्मला, तोताराम भुवनमोहन; 'रंगभूमि' में ताहिरअली, डॉ0 मांगुली; 'कायाकल्प' में अहिल्या, चक्रधर; 'ग़बन' में जालपा, रमानाथ, रतन, रमेश; 'कर्मभूमि' में शान्तिकुमार, रमाकान्त, सुखदा; 'गोदान' में मालती, मेहता; 'मंगलसूत्र' में देवकुमार, संतकुमार पुष्पा व साधुकुमार; आदि सभी पात्र मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले अविस्मरणीय पात्र हैं जिनके चारों ओर मध्यवर्गीय समाज की प्रत्येक परिस्थिति घूमती हुई दिखायी देती है। अतः 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) तक मध्यवर्ग की समस्याओं को एक विस्तार मिलता गया है। यदि हम प्रेमचन्द युग से लेकर वर्तमान समय में मध्यवर्ग पर दृष्टि डालें तो कुछ समस्याओं का समाधान तो हमें मिलता है किन्तु कुछ समस्याएँ वैसी–की–वैसी ही बनी हैं इनका कारण हम व्यक्तिगत सोच को भी कह सकते हैं जबकि आज शिक्षा, आधुनिकीकरण, तकनीकी, विज्ञान व नये–नये अविष्कारों का युग है और इन समस्याओं के चलते भी हम मध्यवर्ग की भूमिका प्रेमचन्द युग से पहले, प्रेमचन्द युग में व देश के सबसे बड़े स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक दृढ़ संकल्प के रूप में देख सकते हैं साथ ही यह वर्ग सदैव राष्ट्रीय चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाला वर्ग रहा है जिसने देश की उपलब्धि में अपना पूरा योगदान दिया।

अतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्द ने अपने सभी उपन्यासों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है। मध्यवर्ग के प्रति उनके हृदय में विशेष सहानुभूति थी। वह स्वयं एक मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित थे।

प्रेमचन्द सदैव आर्थिक समस्याओं को दूर करना चाहते थे। वे समाज में ऐसी व्यवस्था चाहते थे जहाँ एक वर्ग दूसरे वर्ग को शोषित न कर सके। शोषण की समस्या आर्थिक विषमता पर आधारित थी और आर्थिक विषमता का मुख्य कारण आय का सुनिश्चित न होना था। मध्यवर्ग को अपने परिश्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था। प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए पूरी अर्थ–व्यवस्था में सुधार की माँग की। इस प्रकार प्रेमचन्द ने मध्यवर्गीय समाज के संघर्ष को प्रस्तुत कर समाज की सुख व समृद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण समाधानों को अपने सम्पूर्ण साहित्य में रेखांकित कर एक अविस्मरणीय व सराहनीय कार्य किया। यही प्रेमचन्द की सफ़लता है।